कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविन्द नेताम) : (क) जी, हां ।

(ख) और (ग) वर्ष 1992-93 के दौरान नौ तिलहनों का 206.3 लाख मीटरी टन का अखिल भारतीय उत्पादन होने का वर्तमान अनुमान है । पिछले तीन वर्षों में तिलहनों के अंतर्गत क्षेत्र इस प्रकार था :–

	(लाख हैक्टेयर में)
1990-91 . .	241.5
1991-92 . .	254.3
1992-93 (सम्भावित) . .	253.3

(घ) जी, हां ।

(ङ.) 1990-91 तथा 1992-93 (संभावित) के दौरान देश में कुल तिलहनों की प्रति हैक्टेयर पैदावार क्रमशः 771 तथा 815 कि० ग्राम प्रति हैक्टेयर होने का अनुमान है ।

(च) प्रति हैक्टेयर पैदावार बढ़ाने के लिए आठवीं पंचवर्षीय योजना के अंत तक अर्थात् 1996-97 तक देश में तिलहनों के उत्पादन का लक्ष्य 230 लाख मीटरी टन निर्धारित किया गया है ।

विभिन्न प्रकार की फसलें और उन्हें उगाने के लिये वर्षा की अलग-अलग जरूरत

3345. **डा० जितेन्द्र कुमार जैन :**
श्री राम जेठमलानी :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश की कुल कृषि भूमि में से 70 प्रतिशत भूमि वर्षा के पानी पर निर्भर करती है ;

(ख) यदि हां, तो क्या यह भी सच है कि इस भूमि पर उपज की दर बहुत कम है इस दर को बढ़ाने की अति-आवश्यकता है ;

(ग) यदि हां, तो क्या सरकार इस भूमि पर अधिकतम और न्यूनतम वर्षा के स्तर के संबंध में कोई सर्वेक्षण कराया है ;

(घ) क्या सरकार ने वर्षा के पानी की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए अधिकतम उपज देने वाली फसलों की पहचान कर ली है ;

(ङ.) विभिन्न प्रकार की भूमि में खेती के लिए उपयुक्त फसलें कौन-कौन सी हैं और प्रत्येक प्रकार की भूमि पर उनकी खेती के लिए कितने-कितने पानी की जरूरत है ;

(च) क्या देश में इन फसलों के लिए अधिकतम उपज देने में सक्षम बीजों की खोज करने के लिए कोई प्रयास किया गया है ; और

(छ) यदि हां, तो विभिन्न फसलों के लिए अधिकतम उपज देने वाले बीज कौन-कौन से हैं और देश में ऐसे बीजों की वर्षवार उपलब्ध मात्रा कितनी-कितनी है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविन्द नेताम) : (क) और (ख) जी, हां ।

(ग) जी, हां । भारतीय मौसम विज्ञान विभाग नियमित रूप से वर्षा की तारीख का मानिटरिंग कर रहा है ।

(घ) जी, हां ।

(ङ.) सूचना विवरण–1 और विवरण–2 में दी गई है । (नीचे देखिए)

(च) जी, हां ।

(छ) सूचना विवरण–3 में दर्शाई गई है ।

विवरण–I

क्षेत्र/ (मुख्य मृदा क्रम)	सूक्ष्म मुख्य फसलें और फसल प्रणाली
शुष्क (एरिडिसोल)	खरीफ या रबी फसल उत्पादक क्षेत्र खरीफ में बाजरा, मूंग, ग्वार, माथबीन, खरीफ में परती छोड़ी गई जमीन के बाद रबी में चना, सरसों और तारामीरा (यूरेका सेटिवा) शुष्क भूमि कृषि महत्वपूर्ण है।
अर्ध–शुष्क (अल्फासोल्स और संबंधित मृदाएं)	खरीफ उत्पादक क्षेत्र सौरघम, बाजरा, रागी, अरहर, मूंग, मूंगफली तथा अरंडी महत्वपूर्ण फसलें हैं। क्षमता आधारित भू-उपयोग कम जो खिमयुक्त तथा लाभकारी है। कृषि बागवानी प्रणाली लाभकारी है।
अर्ध–शुष्क (वर्टिसोल्स और संबंधित मृदाएं)	खरीफ/रबी और क्रमवार फसल क्षेत्र मुख्य खरीफ फसलें, सौरघम, अरहर, लघु आवधिक दालें, कपास, सूरजमुखी, कुसुम, चना हैं तथा रबी सौरघम मुख्य रबी फसलें हैं। आर्थिक रूप से अच्छी फल आधारित फसल प्रणालियां।
अर्ध–शुष्क (एन्टीसोल्स)	क्रमवार फसल क्षेत्र। खरीफ मौसम में बाजरा तथा लघु आवधिक दालें मुख्य फसलें हैं। रबी मौसम में अरहर और सरसों उगाई जाती है।
अर्ध–आर्द्र (इंसेप्टिसोल्स)	क्रमवार फसल क्षेत्र। खरीफ मौसम में मक्का और रबी में गेहूं मुख्य फसल है।
अर्ध–आर्द्र (एफिसोल्स/ओरिसोल्स, अर्टिसोल्स/एन्टिसोल्स)	ऊंचे इलाके में उगाए जाने वाले चावल मुख्य खरीफ फसल है। लघु आवधिक दालें अरहर और मूंगफली मुख्य खरीफ फसलें हैं। चना, गेहूं, सरसों तथा मसूर मुख्य रबी फसलें हैं।

विवरण–2

क्रम सं.	फसलें	जल की आवश्यकता (से. मी.)
1.	चावल	150–180
2.	मक्का	50–60
3.	सौरघम	40–50
4.	बाजरा	35–40
5.	मूंगफली	40–50
6.	कपास	50–60
7.	पटसन	50–60
8.	रागी	30–35
9.	मूंग (जायद)	30–35
10.	उड़द (जायद)	30–35
11.	गेहूं (बौनी)	40–45
12.	गेहूं (देसी)	30–35
13.	जौ	25–30
14.	सरसों	25–30
15.	सूरजमुखी	30–35
16.	अलसी	20–25
17.	कुसुम	25–30
18.	चना	20–25
19.	मसूर	25–30

विवरण–3

(मात्रा लाख क्विंटल में)

क्र. सं.	फसल	उपलब्ध बीज		
		1990–91	1991–92	1992–93
1.	गेहूं	13.62	13.62	17.61
2.	धान	16.49	15.77	17.21
3.	मक्का	1.89	1.71	1.60
4.	ज्वार	4.03	3.98	3.88
5.	बाजरा	2.24	1.57	1.84
6.	अन्य	0.24	0.21	0.25
		38.51	36.86	42.39
7.	चना	1.72	1.64	1.65
8.	मसूर	0.10	0.11	0.14
9.	मटर	0.43	0.38	0.25
10.	उड़द	0.73	0.64	0.90
11.	मूंग	0.61	0.63	0.81
12.	अरहर	0.55	0.56	0.53
13.	अन्य	0.17	0.15	0.19
	कुल	4.31	4.11	4.47
14.	कुसुम	0.13	0.12	0.13
15.	मूंगफली	6.33	6.22	8.25
16.	तोरिया/सरसों	0.73	0.63	0.97
17.	सोयाबीन	1.39	1.27	1.95
18.	सूरजमुखी	0.40	0.52	0.98
19.	सौरगम	0.08	0.09	0.10
20.	अरंडी	0.22	0.73	0.28
21.	अलसी	0.04	0.02	0.01
22.	रामतिल/अन्य	0.01	0.01	0.02
	कुल	9.33	10.31	12.69

23.	कपास	1.99	2.12	2.24
24.	पटसन / अन्य . . .	0.21	0.29	0.27
	कुल	2.20	2.41	2.51
25.	आलू/सेम	5.95	3.33	3.43
26.	अन्य	0.30	0.31	0.34
	कुल योग	60.58	57.31	65.83

नदी की सतह से मिट्टी की खुदाई

3346. श्री राम जेठमलानी :
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन:

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ के कारण लगभग 12,000 मिलियन टन मिट्टी बह जाती है और उसका अधिकांश भाग नदियों की सतह पर जमा हो जाता है ;

(ख) यदि हां, तो उस पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि लगभग प्रतिवर्ष नदियों की सतह ऊपर उठती जाती है और उनमें पानी बहाने की क्षमता कम होती जाती है जिसके परिणामस्वरूप प्रतिवर्ष बाढ़ आती है ;

(घ) यदि हां, तो क्या सरकार ने पिछले तीन वर्षों के दौरान बाढ़ नियंत्रण कार्यक्रम के अधीन नदियों की सतह से मिट्टी की खुदाई के लिए कोई योजना बनाई है और उसका ब्यौरा क्या है; और

(ङ) क्या सरकार ने आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान देश में बाढ़ प्रवण क्षेत्रों में बहने वाली नदियों से मिट्टी निकाल कर उन्हें गहरा करने का लक्ष्य निर्धारित किया है; यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविन्द नेताम) : (क) और (ख) बाढ़ के कारण कितनी ऊपरी मृदा बह जाती है इसका ठीक-ठीक अनुमान नहीं लगाया जा सकता। एक नदी प्रणाली एक चलायमान अस्तित्व है। पानी और गाद को पहाड़ियों से समुद्र तक पहुंचाना इसका मुख्य कार्यकलाप है। नदी के माध्यम से गाद का बहकर समुद्र तक पहुंचना एकान्तर कटाव तथा जमाव प्रक्रिया के विभिन्न चरणों में होता है जिसके परिणामस्वरूप नदी किनारे के कटाव के कारण कुछ समय के लिए नदी का एक हिस्सा ऊंचा उठ सकता है और दूसरा नीचा हो सकता है।

(ग) चूंकि नदी संचालन एक गतिशील प्रक्रिया है इसलिए तट क्षेत्र के स्तर में नदी के विभिन्न स्थानों पर परिवर्तन हो सकते हैं। इसलिए, यह नहीं कहा जा सकता है कि नदी तल हर वर्ष ऊंचे उठ रहे हैं।

(घ) और (ङ) देश में बाढ़ की समस्या से निपटने के लिए नदी तटकर्षण तकनीकी आर्थिक दृष्टि से व्यावहारिक नहीं समझा जाता ।